इकाई-I

4. दीवानों की हस्ती

-भगवतीचरण वर्मा

प्रस्तावना प्रसंग–

रानी लक्ष्मीबाई

अल्लूरि सीताराम राजु

भगत सिंह

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आँसू बहाना नहीं।
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं।

सुभाषचंद्र बोस

अशफ़ाकुल्ला खान

लौटकर आ सके न जहाँ में तो क्या
याद बनके दिलों में तो आ जाएँगे।
ऐ वतन! ऐ वतन! हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जाएँगे।

– प्रेम धवन

चंद्रशेखर आज़ाद

राजगुरु

रामप्रसाद बिस्मिल

प्रश्न

1. यह गीत किसके बारे में है?
2. चित्र में दिखाये गये लोगों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. इस गीत में शहीदों ने क्या इच्छा ज़ाहिर की है?

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

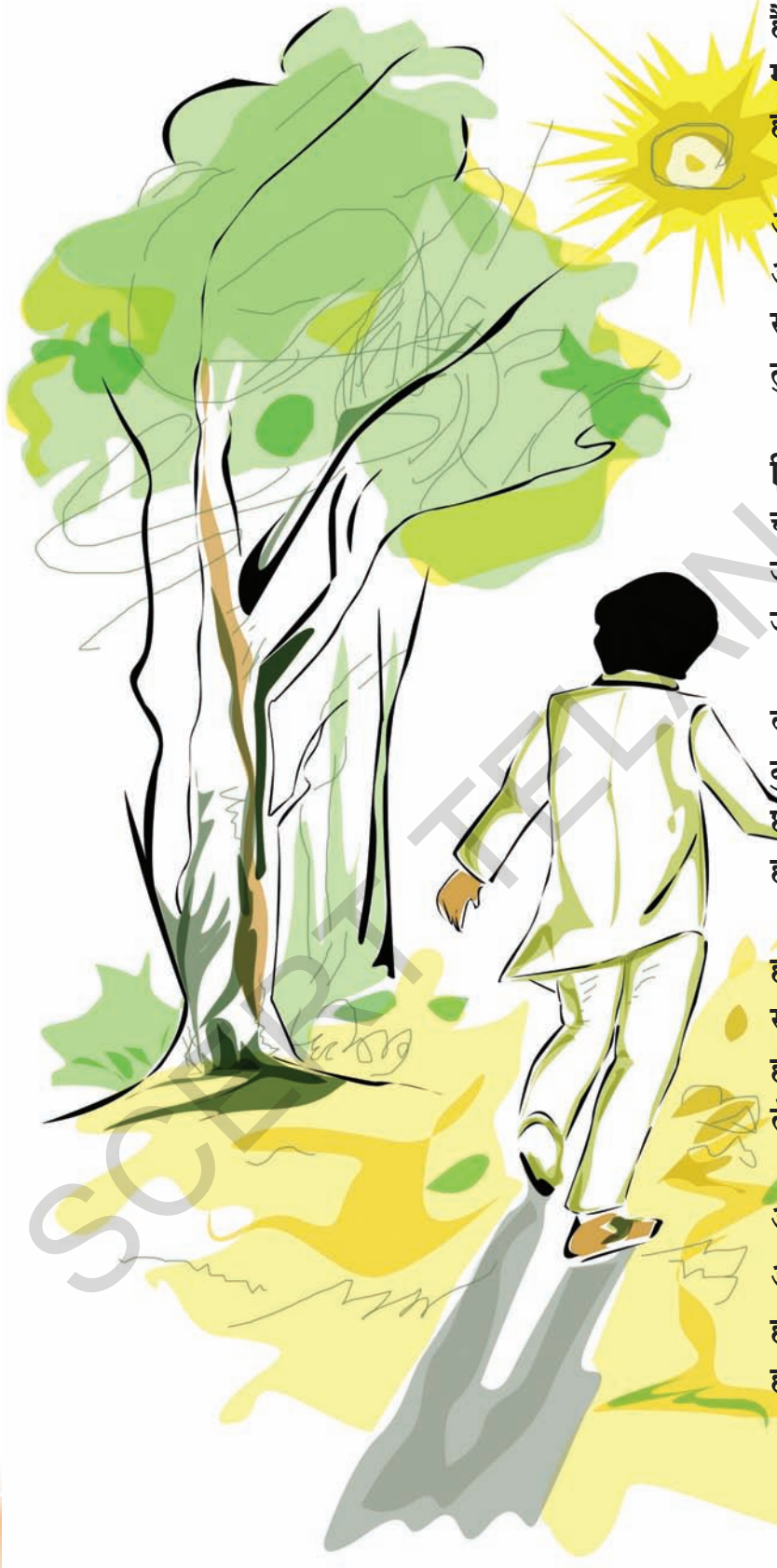

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी-सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।

अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की आँखों में किस प्रकार के भारत का सपना रहा होगा? अपने शब्दों में बताइए।
2. आज़ादी के दीवाने अपने-अपने बंधन कैसे तोड़ चुके?

पढ़िए

1. कवि ने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?
2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न?
3. कविता में ऐसी कौनसी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?
4. एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि "हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।" दूसरी पंक्ति में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्व दिया है कि "मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले" यह फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?
5. इस कविता में आज़ादी के दीवानों का वर्णन है। आइए! अब आज़ादी के दीवाने अमर शहीद भगत सिंह का एक पत्र पढ़ें। पत्र पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

22 मार्च, 1931.

साथियो!

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर ज़िंदा रह सकता हूँ कि मैं क़ैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है- इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जायेंगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या संभवतः मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतंत्रता तक जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया, मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्षा का इन्तज़ार है, कामना है कि यह और नज़दीक हो जाय।

आपका साथी

भगत सिंह

प्रश्न 1. भगत सिंह के पत्र एवं पढ़ी गई कविता 'दीवानों की हस्ती' के भाव में क्या समानता है?

2. भगत सिंह ने स्वयं को सबसे अधिक सौभाग्यशाली क्यों कहा है?

3. भगत सिंह हँसते हुए फाँसी पर क्यों चढ़ना चाहते थे?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आज़ादी के दीवाने चाहते हुए भी अपने बंधु-बांधवों के पास क्यों नहीं रह पाते?
2. वीरों की राह निश्चित क्यों नहीं होती?
3. बलिदानी लोग अपने-पराये का भेदभाव क्यों नहीं रखते?
4. जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. हमें सांसारिक सुख-दुख के भाव को समान क्यों मानना चाहिए? इससे हमें क्या लाभ होगा?
2. आप अपने देश के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे?

SCERT TELANGANA

शब्द भंडार

1. इस कविता में 'हँसना-रोना', 'कही-सुनी', 'सुख-दुख', 'लिए-दिए', 'अपना-पराया', 'आज-कल' आदि विपरीतार्थक शब्दों का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है। दो विपरीतार्थक शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए, जैसे-

   हँसना-रोना :- दूसरों पर हँसनेवालों को एक दिन अवश्य रोना पड़ता है।

2. संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर', 'जी भरकर', और 'खुलकर' शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव के कुछ अन्य शब्द सोचकर लिखिए।

भाषा की बात

1. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षित बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। उदाहरण के लिए इस कविता में मुहावरे का प्रयोग इस पंक्ति में हुआ है-

   "मस्ती का आलम साथ चला
   हम धूल उड़ाते जहाँ चले।" यहाँ 'धूल उड़ाते चलना' मुहावरे का अर्थ है- उत्साह के साथ आगे बढ़ना। 'धूल' शब्द से बने कुछ अन्य मुहावरों का अर्थ शब्दकोश की सहायता से लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   धूल उड़ना
   धूल चाटना
   धूल चटाना
   धूल छानना
   धूल फाँकना
   धूल में मिलना
   धूल में मिलाना

SCERT TELANGANA

प्रशंसा

दुनिया में कई प्रकार के लोग बसते हैं। कुछ दूसरों के बंधन में बँधे होते हैं तो कुछ अपने। एक कविता की पंक्ति है–

"जो अपनी हद में रहते हैं
बेहद अपने में होते हैं।
होते आज़ाद वही जो खुद
बंधन में जकड़े होते हैं।"

जीवन में आत्मनियंत्रण के महत्व पर प्रकाश डालिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कविता आप भी रच सकते हैं। इस कविता के चरणों को आगे बढ़ाने का प्रयास कीजिए।

परियोजना कार्य

किसी स्वतंत्रता सेनानी के संबंध में जानकारी एकत्र कीजिए। उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ। 4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ। 5. पाठ के आधार पर कहानी लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

खेल जहाँ, मैदान वहाँ

उपवाचक

-ज्ञान चतुर्वेदी

मेरे घर के सामने एक छोटा-सा ऊबड़-खाबड़ मैदाननुमा भूमि का टुकड़ा है, जहाँ प्रतिदिन एक सनसनी खोज टेस्ट मैच हो जाता है। स्कूल के बच्चों की बस आठ बजे आती है। बच्चे सात बजे से ही आकर इस स्थानीय 'ओवल' मैदान में इकट्ठे हो जाते हैं। यह मैदान पचास-साठ फ़ीट चौड़ा और इतना ही लंबा है।

सात-आठ बस्ते, एक के ऊपर एक रखकर विकेट बना लिया जाता है। ऐसा चौड़ा और ऊँचा विकेट रिकार्ड बुक में दर्ज होना चाहिए। ऐसी भीमकाय विकेट होने पर भी यहाँ किसी को क्लीन बोल्ड से आउट करना कठिन है क्योंकि बॉल बस्ते टकराई या नहीं, इस पर बच्चे कभी एकमत नहीं होते। खूब झूमाझटकी के बाद कोई मान जाए तो बात अलग है। कैच आउट मानना पड़ता है। वैसे उसमें भी कई बार इस बात पर लड़ाई होती है कि बॉल बहुत तेज़ करी थी और ऐसी तेज़ बॉलिंग करना कहाँ की इनसानियत है। अभी हमारी बारी आने दो तो बताएँगे। फिर न कहना।

सबसे पहले दो टीमों का चयन होता है। बच्चे अधिक हैं, इसलिए यह करना पड़ता है। जो दादा टाइप के बच्चे हैं, उम्र में कुछ बड़े हैं तथा काठी से मज़बूत हैं, वे चयन करते हैं। इस दौरान दूसरों को चूँ-चपाड़ की हिम्मत नहीं पड़ती।

चयन करने वाले पहले अपने यार-दोस्तों को लेते हैं। फिर पड़ोसियों को और फिर एक-दो अच्छा खेलनेवालों को भी। वे स्वयं तो टीम में आते ही हैं और इस बात में वे राष्ट्रीय चयनकर्ताओं से दो क़दम आगे हैं। उस बच्चे का स्थान तो खैर टीम में पक्का है ही, जो बल्ला तथा गेंद लाता है। कई बार वह ज़िद करके कप्तान तक बन जाता है। बात नहीं मानी तो वह अगले दिन बैट नहीं लाएगा। सब देखना पड़ता है चयनकर्ताओं को। इस चक्कर में कुछ अच्छा खेलनेवाले बच्चे बाहर रह जाते हैं।

ये बाहर रह जानेवाले हल्ला करते हैं, कंकड़ मारते हैं और बार-बार चिल्लाते हैं कि चलो, चलो, बस आ गई। उनमें से एकाध को अंपायर बना दिया जाता है जो गुस्से में किसी को भी आउट दे देता है। यदि आउट करने के लिए बहुत हुल्लड़ मचा, तो वह अपना बल्ला वापस ले लेता है। तब अंपायर अपना ही निर्णय रद्द कर देता है।

मैदान के उत्तरी छोर पर कुछ शेडनुमा गैराज़ बने हैं, जिनकी छत पर अगर बॉल चली गई तो खेल न केवल बहुत देर तक बंद रहता है, बल्कि उस बल्लेबाज़ की हैसियत, उम्र तथा स्वास्थ्य के हिसाब

SCERT TELANGANA

से पिटाई तक की जा सकती है। गैराज़ में सीढ़ियाँ नहीं हैं, सो छत से गेंद उतारना कठिन तथा कलापूर्ण है। यह हर बच्चे के बस की बात नहीं। जो चढ़कर निकाल लाता है, उसे अतिरिक्त चार रन मिलते हैं और जिस बल्लेबाज़ ने मारकर फेंकी, वह आउट माना जाता है।

मैदान के दक्षिणी छोर पर मकान है, जहाँ मैं कमेंटेटर की मुद्रा में प्रतिदिन बैठता हूँ। पूर्वी छोर पर एक बाग़ है, जिसमें चली जाने पर गेंद प्रायः खो जाती है और जिसके खिलाड़ी की गलती से गेंद खोई, वह टीम पराजित मानी जाती है।

इसी मैदान में यहाँ-वहाँ कुत्ते, बकरियाँ, गायें और भैंसे बैठी-लेटी या टहलती रहती हैं। जब किसी बच्चे से कैच गिर जाता है या गेंद हाथ से निकल जाती है, तो वह इन चौपायों पर दोष डाल देता है।

'यह बकरी बीच में आ गई, वरना देखता!'

इस मैदान पर बाधाओं के अलावा बहुत से गड्ढे भी हैं। ज़मीन के इतने से टुकड़े पर इतने सारे गड्ढे मैंने कहीं नहीं देखे। इनके अलावा मैदान पर है थोड़ी-सी घास, सूखा-गीला कीचड़, पत्थरों के छोटे-

बड़े टुकड़े, बजरी के ढेर, जिन्हें बस स्टेंड बनाने के लिए वर्षों पहले डाला गया था।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में बच्चे रोज़ सुबह सात से आठ बजे तक मैच खेलते हैं और बहुत बढ़िया खेलते हैं। सब जानते हैं भारतीय क्रिकेट विपरीत परिस्थितियों में ही चमकती है।

किरमिच की रबरनुमा टप्पेदार गेंद से जितनी खतरनाक गेंदबाज़ी कर सकते हैं, की जाती है।

पहले क्रिकेट की असली कार्क की बॉल से खेलते थे, परंतु पिछले महीने ही, खतरनाक पथरीले पिच से उतारकर वह गेंद सीधे पीछे की तरफ़ गई, जहाँ एक सज्जन झोला लेकर मैदान में थर्ड मैन के आसपास से निकलकर बस पकड़ने के लिए लपके जा रहे थे। वे झोले के साथ ही गिर पड़े। गेंद सिर पर लगी थी। सारे बच्चे बस्ते लेकर भाग गए और अगले दिन भी उधर नहीं फटके। स्कूल बस भी खाली गई।

बाद में धीरे-धीरे सब कुछ फिर पूर्ववत शुरू हो गया, परंतु तय किया गया कि किरमिच की गेंद से खेलेंगे। वे सज्जन अभी भी दूसरा झोला लेकर इसी मैदान से निकलते हैं। पहलेवाला झोला किसी ने उस दिन मार लिया, जब वे बेहोश होकर गिर गए थे। बच्चों को उन्होंने माफ़ कर दिया था।

खिलाड़ियों का चयन होने और दो टीमें बनने में ही रोज़ाना सवा सात बज जाते हैं। आठ बजे स्कूल-बस आ जानी है। पैंतालीस मिनट शेष बचते हैं और दोनों टीमों को बैटिंग करनी होती है। दोनों की एक-एक पारी होनी है। कैसे होगा? पर हो जाता है। पैंतालीस मिनट में ही छक्के से लेकर रन-आउट तक सब कुछ संपन्न हो जाता है। अपने आपको कपिलदेव माननेवाला बॉलर, लंबे रन-अप की गुंजाइश छोटे से मैदान में न होने के कारण दूर सड़क से दौड़कर आता है और बॉल अनाप-सनाप फेंक देता है। गेंद पिच के गड्ढों से टकराकर, आप ही आप लेगब्रेक, बंपर, गुगली, आउटस्विंगर इत्यादि कुछ भी हो सकती है, परंतु क्रेडिट बॉलर को पूरा मिलता है।

''क्या बॉल काटी यार, मान गए।''

''कितने विकेट लिए तूने?''

''मैंने तो आज सात विकेट लिए'' बच्चे पैंतालीस मिनट में सात विकेट निकाल रहे हैं और माँ-बाप हैं कि ''कहाँ से फ़ाड़ लाए यह पैंट? कल से खेले तो खबरदार! टाँगें तोड़ दूँगा!''

पर बच्चे निरुत्साहित नहीं होते। वे सारा रिस्क लेकर भी लगे रहते हैं।

बॉलिंग यानी गेंदबाज़ी चल रही है। खतरनाक। मैदान में यहाँ-वहाँ हॉल, कपिल, मार्शल और एंडी रॉबर्ट्स बिखरे पड़े हैं। टीम का हर बच्चा गेंद करना चाहता है। लड़ते हैं सब।

''अब मैं करूँगा।''

''अरे! अभी पाँच ही बॉल तो हुई हैं।''

''उल्लू मत बना। आठ कर चुका।''

''जा-जा.....''

लड़ते हैं आपस में। फिर तय होता है कि सभी को एक-एक ओवर मिलेगा और जल्दी गेंद करनी होगी। लंबा रन-अप नहीं चलेगा क्योंकि बस आनेवाली है। सब बॉलिंग करते हैं। सभी किरमिच की घिसी-पिटी बॉल को स्कूल की सफ़ेद पैंट पर रगड़ते हैं। सबकी गेंदबाज़ी सफल तथा तेज़ है। पिच के गड्ढे, पत्थर, उतार-चढ़ाववाली सतह सब की बराबर मदद करते हैं। सनसनीपूर्ण गेंदबाज़ी चलती रहती है।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि बैटिंग झोल खा रहे हैं। नहीं, कभी नहीं। बल्लेबाज़ों के तेवर तो

SCERT TELANGANA

देखते ही बनते हैं। उनमें हर बच्चा अपने को गावस्कर या कपिल समझे बैठा है। घुमाकर मारो, यहाँ बल्लेबाज़ी का यही सिद्धांत है। कैसी भी गेंद आए या परिस्थिति हो, मारो घुमा के। यह सिद्धांत सफल भी हो जाता है। जिसका बल्ला गेंद से लग गया, चौके से कम नहीं जाती गेंद। चार क़दम पर ही तो चौके की सीमा रेखा है। सारे बच्चे चौका लगा लेते हैं। किरमिच की गेंद उछलती बहुत है, सो छक्के भी सभी लगा डालते हैं। मिनटों में स्कोर पचास-सौ पहुँचता है।

''आज मैंने तीस बनाए।''

''मैंने भी।''

''और मैंने भी।''

सभी खूब बनाते हैं, परंतु पारी बीस मिनट में समाप्त।

फिर दूसरे आते हैं। वे भी बनाते हैं। एक बच्चा स्कोर याद रखता जाता है। मौखिक स्कोर बोर्ड पर किसी को भरोसा नहीं इसलिए हर बच्चा अपना स्कोर खुद भी याद करता जाता है। इसी चक्कर में सब घालमेल हो जाता है। बाद में सभी झगड़ते हैं कि असली स्कोर क्या रहा। कोई नहीं मानता कि कौन जीता। दोनों टीमें जीत का दावा करती हैं। झगड़ा होता है। सभी शामिल होते हैं इसमें। वे भी जो खेल नहीं रहे थे। हंगामा हो जाता है और सब एक-दूसरे को कहते हैं कि-''देख लेंगे बेटा। हमेशा बेईमानी करते हो तुम।''

''हाँ करते हैं। कर ले क्या करेगा? धाँस किसी और को देना।''

तभी बस आ जाती है।

सारे बच्चे, जो लड़ रहे थे, हँसते-खेलते, हो-हल्ला करते, अपने-अपने बस्ते विकेट से निकालकर बस की तरफ़ बेतहाशा भागते हैं। उस दिन का टेस्ट मैच बिना किसी शिकवे के समाप्त होता है।

चली जाती है बस।

प्रश्न :

१. 'खेल मनोरंजन का साधन है।' अपने विचार बताइए।

२. खेल में कैसी भावनाएँ होनी चाहिए?

३. खेलते समय कैसी सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

SCERT TELANGANA